Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2016 = 6.17, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.45269, JULY-AUG 2017, VOL- 4/35

खरगोन जिले के माध्यमिक विद्यालयों में ज्ञानदर्शन आधारित शिक्षण एवं परम्परागत शिक्षण विधि द्वारा ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

सुरेन्द्र कुमार तिवारी[1], Ph. D. & धाराश्री श्रीवास[2]
[1]प्राचार्य, गुलाबबाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्यालय, बोरावां
[2]सहायक प्राध्यापक, गुलाबबाई यादव स्म्ति शिक्षा महाविद्यालय, बोरावां

Abstract

ज्ञानदर्शन के माध्यम से विभिन्न वर्गो के छात्रों हेतु समस्त विषयों पर आधरित कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है । इन कार्यक्रमों में प्राथमिक विद्यालयों, माध्यमिक विद्यालयों, उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों व उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् छात्रों हेतु विभिन्न प्रकार के शैक्षिक कार्यक्रम होते है । इसके अतिरिक्त शिक्षकों हेतु कार्यक्रम प्रौढ़शिक्षा पर कार्यक्रम, दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम, कृषि आधारित कार्यक्रम पर कम्प्यूटर शिक्षा के कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है ।

शब्द कुंजी: *ज्ञानदर्शन आधारित शिक्षण, परम्परागत शिक्षण, शैक्षणिक उपलब्धि*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

आज का युग शिक्षा का जन–जन तक प्रसार एंव सूचनाओं के विस्फोट का युग है । इस संदर्भ में कनाडा देश के विद्वान प्रो. मार्शल मैक्लूहन ने सारे संसार को " सार्वभौम गॉव " की संज्ञा दी है । इसमें इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों की भूमिका अग्रणी हैं । इन इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के अविष्कारों में शैक्षिक रेडियो एंव टेलीविजन सबसे अधिक प्रचलित है । शैक्षिक रेडियो माध्यम श्रवण ज्ञानेन्द्री को आकर्षित करता है जबकि शैक्षिक टेलीविजन श्रव्य एंव दृश्य दोनो ज्ञानेन्द्रियों को आकर्षित करता है । छोटे बच्चे और व्यस्क भी इन अद्भुत माध्यमों से मोहित हो जाते हैं । आज करोड़ो लोग मुख्यतः इन माध्यमों के जरिये बाह्य संसार से संपर्क से संपर्क स्थापित कर शिक्षा एंव सूचना ग्रहण कर रहे है । यह माध्यम उनके विचारो को प्रभावित करते हैं और उनके व्यवहार में साझेदार बनने में सहायक होते हैं ।

ज्ञानदर्शन शिक्षा के लिये सस्ता और सर्वसुलभ दृश्य–श्रव्य माध्यम है । ज्ञानदर्शन का विधिवत् रूप से उद्घाटन 26 जनवरी 2000 को हुआ तथा दूरदर्शन द्वारा इसके उपग्रह प्रसारण की सुविधा सुलभ कराई गई ज्ञानदर्शन को केबल उपग्रह आधारित केबिल टी.वी. व्यवस्था के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है । जून 2000 से ज्ञानदर्शन पर प्रतिदिन 16 घंटे शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रसारण आरम्भ हुआ । जनवरी 2001 से ज्ञानदर्शन पर प्रतिदिन 24 घंटे शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रसारण आरम्भ हो गया । ज्ञानदर्शन पर अनेक अन्त क्रियात्मक कार्यक्रमों काशी प्रसारण आरम्भ किया गया जिसमें छात्र–छात्राओं अथवा दर्शक सीधे स्टूडियो में बैठे विशेषज्ञ से टेलीफोन, फैक्स तथा इंटरनेट के माध्यम से विचारों का आदान–प्रदान कर सकता है । ज्ञानदर्शन शैक्षिक टी.वी. चैनल का प्रारम्भ छात्रों को अध्ययन में अधिकाधिक सहायता पहुॅचाने के लिये किया गया है । ज्ञानदर्शन के उद्भव में मानव संसाधन विकास मंत्रालय तथा इंदिरा गॉधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) द्वारा विशेषकर उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं हेतु शिक्षा की सहायक प्रणाली विकसित करने के विचार का साकार होना है । वर्तमान में ज्ञानदर्शन पर करीब चौबीस घंटे प्रसारण होता है । ज्ञानदर्शन द्वारा छात्र–छात्राओं हेतु अन्तक्रियात्मक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाता है । परम्परागत शिक्षण विधि

वह शिक्षण विधि जो कक्षा की चार दीवारी के मध्य छात्रों को नियंत्रित वातावरण में पुस्तकीय ज्ञान देने के लिये उपयोग में लाई जाती है । परम्परागत विधि कहलाती है । इस विधि में प्रायः अधिगम प्रकिया की उपेक्षा दिखाई पडती है । इस विधि को शिक्षक केन्द्रित विधि भी मानते हैं । इस विधि के कुछ महत्वपूर्ण तथ्य इस प्रकार है ।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

1. इसमें शिक्षक पढाता है बालक पढता है ।
2. शिक्षक सब कुछ जानता है बालक कुछ भी नहीं जानता है ।
3. शिक्षक बोलता है बालक सुनता है ।
4. शिक्षक अनुशासन लागू करता है । छात्र अनुशासित होता है एवं अपने विवेक का उपयोग करता है ।

परम्परागत विधि में बालकों को मूक रहकर शिक्षक के व्याख्यान को सुनना पडता है । इसमें ज्ञान तथा कौशल के बिन्दुओं को अबोध बालक तक शिक्षक के द्वारा पहुंचाया जाता है । इस विधि में बौद्धिक और व्यवहारिक ज्ञान के लिये एक सीमा तक बालकों में सृजनोन्मुख गुणों का विकास नहीं हो पाता । क्योंकि शिक्षक को इस विधि में ज्ञान का संतुलित करने तथा संचालित करने का अधिकार दिया गया है ।

- **समस्या से संबंधित उद्देश्य :–**

  1.परम्परागत विधि एवं ज्ञानदर्शन से शिक्षण करने पर ग्रामीण छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन करना ।

  2.परम्परागत विधि एवं ज्ञानदर्शन से शिक्षण करने पर ग्रामीण छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन करना ।

- **शोध समस्या की परिकल्पनाएँ :–**

1. परम्परागत विधि एवं ज्ञानदर्शन से शिक्षण करने पर ग्रामीण छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।
2. परम्परागत विधि एवं ज्ञानदर्शन से शिक्षण करने पर ग्रामीण छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।

- **न्यादर्श एवं शोध विधि :–**

उपलब्ध साधनों को नियमबद्ध रूप में प्रगतिशील दृष्टिकोण से सकारात्मक प्रयासों के लिये उपयोग करना योजना कहलाती है। किसी भी कार्य की सफलता उसकी व्यवस्थित योजनानुसार कार्य विधि पर ही निर्भर करती है । इस शोध कार्य के लिये निम्नलिखित योजना बनायी गयी ।

1. शोधकार्य को खरगोन जिले तक की सीमित रखा गया है ।
2. खरगोन जिले के दो शहरी एवं दो ग्रामीण शासकीय शालाओं का चयन किया गया ।
3. शहरी क्षेत्र में कक्षा आठवी के 60 छात्र एवं 60 छात्राओं का चयन किया गया इस प्रकार कुल 120 विद्यार्थी चुने गये ।
4. ग्रामीण क्षेत्र में कक्षा आठवी के 60 छात्र एवं 60 छात्राओं कुल 120 विद्यार्थियों का चयन किया गया ।
5. छात्र–छात्राओं के दौ औसत समूह बनाये गये । इसमें से एक नियंत्रित समूह एवं दूसरा प्रयोगात्मक समूह बनाया गया ।
6. प्रत्येक समूह में 30 छात्र एवं 30 छात्राऐ क्रमशः शहरी एवं ग्रामीण शालाओं से लिये गये ।
7. इस प्रकार नियंत्रित समूह में शहरी क्षेत्र से 30 छात्र एवं 30 छात्राऐं एवं प्रयोगात्मक समूह में भी 30 छात्र एवं 30 छात्राओं को चुना गया ।
8. समय सीमा को दृष्टिगत रखते हुए माध्यमिक स्तर की कक्षा आठवी के गणित विषय की केवल पांच इकाइयों का चयन किया गया ।
9. सर्वप्रथम शहरी क्षेत्र के नियंत्रित समूह एवं प्रयोगात्मक समूह का पूर्व परीक्षण किया गया ।
10. इसके पश्चात् नियंत्रित समूह को परम्परागत विधि से चुनी गयी इकाईयों को पढाया गया ।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

11. प्रयोगात्मक समूह के छात्र–छात्राओं को भी पूर्व परीक्षण के बाद ज्ञानदर्शन (पाठ्य वस्तु की सी. डी.तैयार करके टी.वी.द्वारा) से पढाया गया ।
12. प्रत्येक समूह को 6–6 कालखण्ड पढाये गये ।
13. इसी प्रकार ग्रामीण छात्र–छात्राओं को भी परम्परागत विधि एवं ज्ञानदर्शन से पढाया गया ।
14. शहरी छात्र–छात्राओं का पश्च परीक्षण लिया गया ।
15. इसी प्रकार ग्रामीण छात्र–छात्राओं का भी पश्च परीक्षण लिया गया ।

- **प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या –**

तालिका क्र. 1

परीक्षण	छात्रों का समूह	छात्रों की संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	मानक त्रृटि	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
पूर्व परीक्षण	नियंत्रित	30	11.5	2.45	0.45	0.06	सार्थक अंतर नहीं है
	प्रयोगात्मक	30	11.43	3.56	0.65		
पश्च परीक्षण	नियंत्रित	30	12.96	2.72	0.5	2.74	सार्थक अंतर है
	प्रयोगात्मक	30	15.7	3.0	0.54		

स्वतंत्रता कोटि (30–1) + (30–1) = 58
0.05 विश्वास के स्तर पर = 2.00
0.01 विश्वास के स्तर पर = 2.66

व्याख्या :

प्रयुक्त परिकल्पना में (शासकीय शाला) ग्रामीण क्षेत्र के नियंत्रित तथा प्रयोगात्मक समूह के छात्रों का पूर्व परीक्षण से कान्तिक अनुपात(CR) का मान 0.06 प्राप्त हुआ । 0.05 विश्वास के स्तर तथा 0.01 विश्वास के स्तर के मान से कम है । अतः दोनों समूहों में कोई सार्थक अंतर नहीं है

पश्च परीक्षण में क्रांतिक अनुपात (CR) का मान 2.74 प्राप्त हुआ है जो .05 विश्वास के स्तर एवं 0.01 विश्वास के स्तर के मान से अधिक है अतः दोनों समूहों में सार्थक अंतर है ।

यहॉ परिकल्पना क्र. 01 अस्वीकृत होती है और सत्यापित होता है कि परम्परागत विधि तथा ज्ञानदर्शन से शिक्षण करने पर उनकी उपलब्धि में सार्थक है एवं ज्ञानदर्शन से शिक्षण द्वारा छात्र अधिक उपलब्धि प्राप्त करते है ।

तालिका क्र.2

परीक्षण	छात्रों का समूह	छात्रों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रृटि	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
पूर्व परीक्षण	नियंत्रित	30	11.3	2.22	0.40	0.43	सार्थक अंतर नहीं है
	प्रयोगात्मक	30	11.7	2.46	0.45		
पश्च परीक्षण	नियंत्रित	30	13.04	2.48	0.45	3.01	सार्थक अंतर है
	प्रयोगात्मक	30	15.9	2.74	0.5		

स्वतंत्रता कोटि (30–1) + (30–1) = 58
0.05 विश्वास के स्तर पर = 2.00
0.01 विश्वास के स्तर पर = 2.66

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

व्याख्या :

प्रयुक्त परिकल्पना में ग्रामीण छात्राओं के नियंत्रित तथा प्रयोगात्मक समूहों के पूर्व परीक्षण से CR का मान 0.43 प्राप्त हुआ जो 0.01 एवं 0.05 विश्वास के स्तर से कम है । अतः दोनों समूहों में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।

पश्च परीक्षण में क्रांतिक अनुपात (CR) का मान 3.01 प्राप्त हुआ है जो 0.01 विश्वास के स्तर एवं 0.05 विश्वास के स्तर से अधिक है अतः दोनों समूहों में सार्थक अंतर है ।

यहॉ परिकल्पना क्र. 02 अस्वीकृत होती है और सत्यापित होता है कि परम्परागत विधि की अपेक्षा ज्ञानदर्शन से शिक्षण द्वारा छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि बढती है ।

प्रदत्तों के विश्लेषण एवं व्याख्या के आधार पर परिकल्पनओं का सत्यापन निम्नानुसार किया गया है ।

परिकल्पना क्रमांक 1

परम्परागत विधि एवं ज्ञानदर्शन से शिक्षण करने पर ग्रामीण छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।

प्रमाणीकरण : तालिका क्र.1 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण शासकीय शालाओं के प्रयोगात्मक समूह के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है । यह अंतर उनमें ज्ञानदर्शन से शिक्षण के कारण हुआ ।

निष्कर्ष : परिकल्पना अस्वीकृत होती है ।

परिकल्पना क्रमांक 2

परम्परागत विधि एवं ज्ञानदर्शन से शिक्षण करने पर ग्रामीण छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।

प्रमाणीकरण : तालिका क्र.2 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण शासकीय शालाओं के प्रयोगात्मक समूह की छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है । यह अंतर उनमें ज्ञानदर्शन से शिक्षण के द्वारा ही प्राप्त हुआ है ।

निष्कर्ष : परिकल्पना अस्वीकृत होती है ।

- **निष्कर्ष :–**

माध्यमिक विद्यालयों में ज्ञानदर्शन आधारित शिक्षण एवं परम्परागत शिक्षण विधि द्वारा विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन । विषय पर अध्ययन करने से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये :–

1. ग्रामीण शासकीय शालाओं के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर ज्ञानदर्शन द्वार शिक्षण का सार्थक प्रभाव पड़ता है ।
2. ग्रामीण शासकीय शालाओं की छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि परम्परागत विधि की अपेक्षा ज्ञानदर्शन शिक्षण द्वारा अधिक प्रभावित होती है ।
3. माध्यमिक स्तर पर कक्षा आठवीं की छात्र एवं छात्राओं को परम्परागत विधि की अपेक्षा ज्ञानदर्शन से शिक्षण करने पर उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में समान रूप से वृद्धि होती है । अर्थात लिंग भेद का शैक्षणिक उपलब्धि पर कोई अंतर नहीं पडता है ।
4. शहरी शासकीय शालाओं के छात्रों की कक्षा आठवीं के गणित विषय का ज्ञानदर्शन से शिक्षण करने पर शैक्षणिक उपलब्धि मे वृद्धि होती है ।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

5. शहरी शासकीय शालाओं की छात्राओं की भी ज्ञानदर्शन से शिक्षण करने पर शैक्षणिक उपलब्धि बढती है ।
6. शहरी शासकीय माध्यमिक शालाओं में कक्षा आठवीं गणित विषय का शिक्षण परम्परागत विधि एवं ज्ञानदर्शन द्वारा करने पर छात्र एवं छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि समान रूप से बढती है । अतः शैक्षणिक उपलब्धि पर लिंग भेद का कोई प्रभाव नहीं पडता है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

राय डॉ. ,पारसनाथ,अनुसंधान परिचय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल अस्पताल रोड, आगरा ।
सरीन एवं सरीन, शैक्षिक अनुसंधान विधियां, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
कक्षा 6टी गणित, मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम भोपाल।
कुलश्रेष्ठ, डॉ. एस.पी. ,शैक्षिक तकनिकी, विनोद पुस्तक मंदिर ,आगरा।
शर्मा, डॉ. चेतन, गणित शिक्षण, आर.लाल बुक डिपो ,मेरठ ।
गैरट ,डॉ. हेनरी ई.,शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी,वकील्स फेफर एण्ड सीमन्स एल.टी.एस. बाम्बे–400038
एजुसेट से संबंधित पाठ्य सामग्री।
http:/www.edusatindia.org/top.htm.
http:/www.isro.org/.

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies